सारथी — जरुरतमंद कलाकारों के मददगार

अपनी कहानी अपनी जुबानी

बुनकर, दस्तकार, लोक कलाकार एवं शास्त्रीय संगीतकारों के साथ
मिलकर आजादी का जश्न

14 अगस्त 200

को
दिल्ली की कच्ची बस्तियों के कलाकार
स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर
आप को सादर आमंत्रित करते हैं
कठपुतली कालोनी, शादीपुर डिपो, नई दिल्ली– 110008
प्रातः 10:00 बजे से दोपहर 1:00 बजे तक

आइये कला का माहौल बनायें
कला को एक नई राह दिखायें

दोस्तो,

14 अगस्त 1988 को स्व0 कमला देवी चटोपध्याय जी ने हमारे बुनकरों द्वारा बनाया गया तिरंगा सभी हुनरमंद कलाकारों की नई पीढ़ी को सौंपा था। उस दिन से आज तक हम सब बुनकर, दस्तकार, संगीतकार और लोक कलाकारों की सहकारी समितियाँ हर वर्ष एक खास विषय लेकर स्वतंत्रता दिवस मनाते आये हैं।

इस वर्ष का विषय है.....

अपनी कहानी–अपनी जुबानी

कुछ दिनों पहले मेरी मुलाकात हरकेश कुम्हार से हुई। बड़ी गाड़ियाँ, तेजी से चलते स्कूटरों के बीच अपने दो गधों के साथ, घबराया हुआ हरकेश। पूछने पर पता चला कि गधों पर अपना सामान रखकर वह गाँव से शहर आया था। थकान से चूर उसका एक गधा बैठ गया और कड़ी मेहनत से बने मिट्टी के गमले मिट्टी में मिल गये। आज की भागती दौड़ती जिन्दगी लम्बी दूरी को कुछ मिनटों में तय कर लेने वाले साधन, हर समस्या का झट से उपाय देने वाले विशेषज्ञ और गधे के बैठने से व्यापार चौपट ! है न कुछ अजीब बात।

आप सब को मालूम होगा हाल ही में रेलवे में कुल्हड़ का प्रयोग शुरू किया गया है। शुरूआत हुई नहीं कि बड़े जोर शोर से विरोध भी शुरू हो गया है। पर्यावरणविदों द्वारा विरोध, सेहत विशेषज्ञों द्वारा विरोध, अर्थशास्त्रियों द्वारा विरोध और सबसे खतरनाक है सोफों पर बैठे विशेषज्ञों की बेढंगी राय। सारे समाचार पत्र इन खबरों से भरे हुए हैं। कोई नहीं सोच रहा है इस योजना से हरकेश जैसे कई और प्रजापत समाज के सदस्यों को पहुंचने वाले फायदे के बारे में।

कुल्हड़ में चाय के साथ मिट्टी की सौंधी खुशबू के ज़ायके को प्लास्टिक कप में कोल्डड्रिंक पीने वाले क्या जाने ? खुरों से गुथीं, तालाब से निकली चिकनी मिट्टी से प्रजापत के हाथों द्वारा नये जन्म की कहानी, कौन समझाए ? हजारों स्टेशन, हर गाँव में बसे कुम्हार, उनका सीधे स्टेशनों पर कुल्हड़ पहुंचाने का छोटा सा उपाय, एक बड़ी सफलता की तरफ नन्हीं सी शुरूआत। कौन कहेगा यह कहानिया ?

हिमालय से हिन्दुकुश तक फैले भारतवर्ष के गुणी पुत्र विश्वकर्मा, प्रजापत, सोमपुरा, मिरासी–चारण, शास्त्रिय संगीतकार, बुनकर कहाँ छुपे बैठे है ? कौन हैं इंडियन कलाकार ? क्या है मार्गीय, क्या देशीय ? किस आधुनिक और नई जनगणना में गिनती हुई है हमारी ?

कई सरकारी महकमे, कलाकारों के हित में ढेरो योजनाएँ, परन्तु कितना फायदा पहुँच पाता है कलाकारों तक ? बुनियादी सुविधाओं के अभाव में जीते कलाकार कब तक रह पायेंगे भारतीय सभ्यता की नींव ?

कई पीढ़ियों का हुनर संजोये लोक कलाकार विदेशों में सांस्कृतिक राजदूत और दिल्ली में भिखारी कहे गये, क्यों ! बालीवूड की कई हस्तियों ने इनके लिये काम करने की बजाय इनकी शैली को चुरा कर नाम कमाया।

कब तक आशा करते रहेंगे कि हमारी कहानी कोई कहे ?

कलाकार की शक्ति उसकी सृजनात्मक सोच होती है, उसकी दुनिया को देखने का अलग नज़रिया उसकी कला को संदर्भ प्रदान करता है। इस नज़रियों को लेकर यदि सब एकजुट होकर अपनी कहानी कहें तो बहरे हो चुके देश के नेता, नीति निर्माता हमारी बात सुनने को मजबूर होंगे वक्त आ गया है कि सभी कलाकार एकजुट होकर अपनी कहानी अपनी जुबानी कहें।

आज के इस संचार प्रधान समाज में ऐसी शुरूआत बहुत आसान है। परन्तु आवश्यकता है मिलकर सृजन करने के संकल्प की। ऐसी शुरूआत करोड़ों की संख्या में पूरे देश में बिखरे हुए कलाकारों को एकजुट करने वाली डोर बन सकती। अगर ऐसा हो पाया तो फिर कौन इस बुलंद आवाज़ को नजर अंदाज कर पायेगा ?

आजादी के 57वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में आईये हम सब संगठित होकर सृजनात्मक ढंग इस कहानी को कहने का संकल्प ले। आइये और सुनाइये अपने किस्से, अनुभव और कहानियाँ। हम सब मिलकर कहेंगे

अपनी कहानी.....अपनी जुबानी।

जय हिन्द

राजीव सेठी

राजीव सेठी

सारथी – जरुरतमंद कलाकारों के मददगार

निमंत्रण

आप आमंत्रित हैं स्वतन्त्रता दिवस समारोह मनाने के लिए पारम्परिक कलाकारों की बस्ती में। जहां पर कलाकार किस उत्साह और साहस से सदियों पुरानी सांस्कृतिक धरोहर को अपने में समेटे हुए हैं।

कार्यक्रम :

14 अगस्त -2004

11:00 बजे प्रातः ..... झंडा रोहण, राष्ट्रगान
11:05 बजे प्रातः ..... अतिथि भाषण
11:15 बजे प्रातः ..... सांस्कृतिक कार्यक्रम

कार्यक्रम स्थल : भूले बिसरे कलाकार वर्कशॉप, कठपुतली कालोनी, शादीपुर डिपो, नई दिल्ली–110008
फोन नं० : 25706189

कार्यक्रम सहयोगी : भूले बिसरे कलाकार कोआपरेटिव सोसाईटी।

शुभकामनायें

विनीत

(राजीव सेठी)